डॉ. भीमराव अम्बेडकर :– समाजिक न्याय एवं त्याग की मुर्ति

Dr. Bhimrao Ambedkar -Samajik nyay evam tyag ki murti

अमृत लाल चन्द्रभाष
सहा.प्राध्यापक (राज.विज्ञान)
शास.लाल चक्रधर शाह महावि. अम्बागढ़ चौकी
जिला – राजनांदगांव (छ.ग.)
Email :- alchandrabhas888@gmail.com

पृष्ठभूमि :–

डॉ. भीमराव अम्बेडकर सामाजिक परिवर्तन के महानायक अपना सम्पूर्ण जीवन, सामाजिक समानता स्थापित करने, दलितों को उसके हक दिलानें, सामाजिक–धार्मिक कुरीतियों को मिटाने, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था को समाप्त करने के लिये, दलित स्त्रियों के विकास में अपना संम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर अपने समय में देखा कि किस प्रकार मानव समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को समाज में कहीं भी स्थान नहीं है। उसे निम्न और हेय की दृष्टि से देखा जाता था। उनका दोष सिर्फ यह है, कि उनका जन्म हिन्दू समाज के निम्न समझे जाने वाले अस्पृश्य जाति में हुआ था। जिसको सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार बिल्कुल ही नहीं था। जो पशुओं की तरह जीवन जीने के लिये मजबूर था। यहाँ तक पशु से भी बदतर जीवन जीने के लिये मजबूर था। उसी समय सूबेदार मेजर रामजी का स्थानांतरण महू में हुआ। महू मध्य प्रदेश के इंदौर शहर के निकट स्थित है। भीमाबाई के गर्भ से 14 अप्रैल 1891 को अछूत समझे जाने वाली महार में जाति हुआ। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बचपन से ही सामाजिक, आर्थिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। प्रारंभिक शिक्षा से ही भेदभाव स्कूल के बाहर रहकर पढाई करना, कक्षा के अंदर प्रवेश करने की अनुमति न होना , सार्वजनिक पानी को पीने का अधिकार नहीं होना। इस तरह की सामाजिक भेदभाव से बचपन से ही गुजर चुका था। सतारा के कैम्प स्कूल में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उन्होंने बम्बई के एलफिन्सटन कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये प्रवेश लिया। बड़ौदा नरेश महाराजा सायाजीराव गायकवाड़ से उन्हें छात्रवृत्ति की मदद मिली और उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा छात्रवृत्ति की सहायता से कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्ययन किया जो तत्कालीन परिस्थितियों में उल्लेखनीय था। अर्थशास्त्र में एम.ए. (अमेरिका से) करने के बाद 1916 में विश्व के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड पोलिटिकल साइन्स में अध्ययन किया। तत्पश्चात लंदन विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधी प्राप्त किया।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की।

समस्या चयन :–

राजनीति विज्ञान के अंतर्गत आज चिंता का विषय है। कि राजनेता अपने को समाज सुधारक समझते हैं। किन्तु डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का वह त्याग बलिदान कहीं देखनें को नहीं मिलता। आज नेता अपने, आप को दलितो का हितैसी दिखाने में लगे हुये हैं। चुनाव के समय में दलित वोट बैंक को पाने के लिये बड़े–बड़े वादा करते है। जैसे ही कोई राजनेता विधायक और मंत्री बनता है। उसकी वादा काफूर हो जाती है। चुनाव में बड़े–बड़े वादे जरूर करते हैं। जब निभाने का समय आता है, तो मुंह फेर लेते हैं। दलित जनता हमेंशा धोखा का शिकार रहता है। राजनेता सत्ता को प्रात्त करने के लिये छल–प्रपंच का सहारा लेने से नहीं हिचकिचाते। इस कारण से राजनीति दूषित होता जा रहा है। हमें सच्चे दिल से डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के अनुकरण करना होगा। तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगा। बाबा साहब कभी भी पद एवं पैसों के लिये काम नहीं किया वह हमेशा समाज की भलाई के लिये काम किया है।

उद्देश्य :–

1- समाज में व्याप्त असमानता का विरोध करना।
2- अस्पृश्यता निवारण के लिये सशक्त आंदोलन करना।
3- हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था को समाप्त करने के लिये प्रयास करना।
4- दलित, शोषित समाज में जन जागरूकता जागृत करने का प्रयास करना।
5- शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़े वर्गों में आत्म विश्वास जागृत करना।
6- समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त करना।
7- अस्पृश्यता निवारण के लिये सशक्त आंदोलन करना।
8- हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था की असमानता को दूर करने के लिये प्रयास करना।
9- दलित, शोषित समाज में मनोबल जागृत करने का प्रयास करना।
10- शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़े वर्गों में आत्म विश्वास जागृत करना।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रमुख पुस्तकें :–

1- रूपये की समस्या– इसकी उत्पति और समाधान 1923
2- जाति का नाश 1936
3- थॉस्ट् ऑन पाकिस्तान 1941
4- कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया है 1945
5- पाकिस्तान या भारत वर्ष का विभाजन 1946
6- अछूत, वे कौन थे और अछूत कैसे बने 1948
7- भाषायी राज्यों पर विचार ?
8- बुद्धा एण्ड हिज धम्मा 1957
9- हू वर दि शुद्धाज 1946
10- स्टेट एण्ड माइनॉरिटिज 1948
11- दि राइज एण्ड फॉल ऑफ दि हिन्दू वूमैन
12- गांधी एण्ड गांधीज्म

संगठन एवं संस्थानों की स्थापना में योगदान :–

1- बहिस्कृत हितकारिणी सभा 20 जुलाई 1924
2- इनडिपेण्डेन्ट लेबर पार्टी ऑफ इण्डिया अक्टूबर 1936
3- अनुसूचित जाति फेडरेशन 1942
4- भारतीय बुद्ध महासभा 1955

सामाजिक समरसता की स्थापना के लिये जीवन समर्पित :–

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर सामाजिक क्रांति नवजागरण के अग्रदूत थे। वे संविधान के निर्माता, प्रबुद्ध, चिंतक, एक महान् समाजशास्त्री थे। जिन्होंने समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय पर आधारित समाज के गठन के लिये सतत् प्रयास किये। भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, तथा धार्मिक रूप से उपेक्षित दलित वर्ग के उत्थान हेतु उन्होंने निष्ठा और समर्पण की जिस स्थिति को अपनाया उसके आधार पर उन्हें ***भारत का अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर*** कहा गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर अगाध ज्ञान के प्रकाश से पल्लवित, कर्तब्य निष्ठ, अद्भूत प्रतिभा के धनी, सत्यनिष्ठ, स्पष्टवादिता के धनी डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारतीय दलित के उत्थान के लिये संकल्पित थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन के पग–पग में सामाजिक अपमान का दंश भोग चुका था। जिसे समाप्त करने के लिये दलित समाज की उत्थान कर समाजिक समरसता स्थापित करने जीवन को समर्पित हो गये। डॉ. भीमराव अम्बेडकर संघर्ष के प्रतीक थे। जाति रूपी सामाजिक संरचना जिसकी नींव अन्याय और शोषण पर रखा गया है। उसे ध्वस्त करना आवश्यक समझते थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारत की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया। उनका सामाजिक दृष्टिकोण कोरा कल्पना पर आधरित नहीं अपितु तथ्यपरक है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का कहना था कि– ***मेरा झगड़ा हिन्दुओं और हिन्दूधर्म से नहीं है। अपितु हिन्दू समाज में व्याप्त पाखण्ड और जातिवाद से निर्मित सामाजिक व्यवस्था से है।*** ये हिन्दू धर्म चींटियों को गुड़ खिलाने एवं मछलियों को दाना खिलाने की बात करता है। किन्तु एक मानव को मानव होंने के बाद भी पशुओं से बदतर व्यवहार किया जाता है। अछूतों के प्रति हिन्दू समाज द्वारा किया जाने वाला भेद–भाव का अम्बेडकर जीवन पर्यंत संघर्ष करते। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का कहना था कि ***मैं चाहता हुँ कि***

लोग पहले अपने को भारतीय समझे और अंत तक भारतीय बनें रहें। इससे भारत में एकता बनी रहेगी और लम्बे समय के बाद मिलने वाली आजादी में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होगा। स्वराज्य की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। किन्तु भारत में किसी प्रकार का फूट हमारे आजादी के लिये घातक होगा और आजाद होकर भी हम अपने निहित स्वार्थों के लिये आपस में लड़ते रहेंगे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर दलितों के लिये बहुत चिंतित थे। दलित शब्द से आशय पीड़ित, शोषित, दबा हुआ, खिन्न उदास, टुकड़ा, खंडित, कुचला हुआ, पीसा हुआ, रौंदा हुआ, विनष्ट आदि से लिया जाता है। अंग्रेजी में डिप्रेस्ड क्लास के नाम से जानते है, दलित शब्द भारत में जाति विशेष के लिये इस्तेमाल किया जाता है। ये ऐसे वर्ग है, जो हजारों वर्षों तक अस्पृश्य या अछूत समझी जाने वाली उन सभी शोषित जातियों के लिये प्रयोग किया जाता है। हिन्दू धर्मशास्त्रों द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवस्था में वर्ण ब्यवस्था, जाति व्यवस्था के सबसे नीचले स्तर पर स्थित है। दलित वे हैं, जो सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से नरकीय जीवन यापन करने के लिये मजबूर हैं। जिन्हें भारतीय सामाजिक वर्ण व्यवस्था में अति शूद्र की श्रेणी में शामिल किया गया है। जिसको छूना, हाथ लगाना, पाप समझा जाता है। जिसके छाया भी पड़ने पर भी समाज के उच्च वर्ग अर्थात सवर्ण अपने को अपवित्र समझते हैं। अछूतों को तालाबों, कुओं, मंदिरों, शैक्षणिक संस्थाओं आदि, सभी सार्वजनिक स्थानों में जाने पर पूर्ण रूप से वंचित कर दिया गया था। उनके ऊपर अमानवीय कृत्य किया, मजबूर कर मैला ढुलवाई का काम, गंदगी उठाने का काम, मैला ढोने का काम, जुठे बर्तन सफाई का काम, मरे हुये जानवरों को उठाने का काम घर एवं खेतों में बेगारी कराने का काम करवाये जाते थे। तथा उन्हें दूर से नाक में कपड़ा रखकर जुठन खाने को दिया जाता था। बांस के लम्बी नलिकाओं की ढ़ोड़ी से पानी पीने को दिया जाता था। खांसने एवं थूकने के लिये उनके गर्दन में मिट्टी के बर्तन बांध दिया जाता था, उसके चलने से रास्ता अपवित्र न हो इसलिये उनके पीछे झाड़ू बांध दिया जाता था। जिस सार्वजनिक जगह पर वे बैठते थे। उस स्थान को गोबर पानी से धुलवाया जाता था । इस तरह की अत्यंत ही मानवता को शर्मसार कर देने वाली परिस्थितियां दलितों के लिये निर्मित कर दिया था। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में वर्ण व्यवथा एवं सामाजिक व्यवस्था पर आधारित जाति व्यवस्था का प्रचलन रहा है। मनुस्मृति कॉल में सामाजिक एवं धार्मिक नियमों तहत् वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था को संहिताबद्ध कर, अत्यंत ही कठोर बना दिया। जिसके कारण पुरोहितवाद, कर्मकाण्डवाद को जन्म दिया। जिससे सामाजिक अलगाववाद धीरे–धीरे बढ़ने लगा, सामाजिक बुराई घर करने लगा। जिस कारण से सामाजिक शक्ति कमजोर हो रहा था। इसको दूर करने के लिये आदि काल से ही समय–समय पर आवाज उठने लगी, स्वामी महावीर, गौतम बुद्व, रामानंद, कबीर, नानक, रविदास आदि ने भी अपने धार्मिक उपदेश के माध्यम से सामाजिक बुराई को दूर करने का प्रयास किया गया। आधुनिक कॉल में राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फूले, नरायण गुरू आदि ने सामाजिक बुराई को दूर करने का कार्य किया। दलितो के उत्थान एवं अछूतोद्धार की दिशा में इसाई मिशनरियों, धर्म परिवर्तनवादियों, ब्रम्ह समाज, रामकृष्ण मिशन, प्रार्थना समाज, आर्य समाज तथा भारत सेवा समिति आदि संस्थानों के द्वारा प्रयास किया गया। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियॉ, अंधविश्वास, रूढ़ियां, शोषण, उत्पीड़न, दमन, और सामाजिक असमानता के विरूद्व आवाज उठाने का श्रेय डॉ. अम्बेडकर को ही दिया जाता है। वे न केवल इस कुरीतियों के विरूद्व आवाज उठाया, अपितु सामाजिक संगठन स्थापित कर जीवन भर संघर्ष किया। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों की वकालत कर ऐसे भय, भेद एवं शोषण मुक्त समाज की स्थापना का संकल्प लिया, जो जन्म के स्थान पर कर्म पर, शोषण के स्थान पर पोषण पर आधारित समाज की स्थापना, पीड़ित एवं शोषित दलित वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने को 1920 में उन्होंनें मराठी भाषा में मूक नायक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। जिसके प्रथम अंक में भारत को अछूतों एवं असमानता का घर बतलाया और कहा कि जब तक अछूतों के लिये मौलिक अधिकारों की व्यवस्था नहीं होगी तब तक स्वराज्य से काई लाभ नहीं हो सकेगा। सन् 1924 में बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। जिसका उद्देश्य था, अस्पृश्य लोगों की नैतिक एवं भौतिक उन्नति करना था। उन्होंने अछूतों के लिये मंदिरों में प्रवेश एवं कुओं से पानी भरने के नागरिक अधिकार को प्राप्त करने का प्रयास किया डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितो के पृथक निर्वाचन मंडल की मांग की जिसे ब्रिटिश सरकार ने स्वीकार कर लिया। डॉ. अम्बेडकर ने बताया की दलित समाज की उन्नति बिना शिक्षा एवं सामाजिक न्याय के नहीं हो सकती। सामाजिक जागरूकता, सामाजिक विकास की प्रथम अनिवार्यता है। सन् 1930 में डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के प्रतिनिधि के रूप में लंदन में आयोजित प्रथम गोलमेच सम्मेलन में भाग लिया, और दलितो की समस्या को उठाया समता मूलक कानून सब के लिये समान हो। सामाजिक बहिष्कार करने वालों को कड़ा दण्ड मिले। सरकारी नौकरी में दलित वर्ग के लिये स्थान आरक्षित हो, विधान सभा में दलित वर्ग के लिये स्थान आरक्षित हो। दलितों के विरूद्ध नागरिक भेदभाव को समाप्त करने के लिये कानून बने। समान संरक्षण विधान सभा में तथा सरकारी नौकरियों में समुचित प्रतिनिधित्व सहित विभिन्न मांगों की पुरजोर वकालत की जिसके कारण अंग्रेजों को साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की मांगों को स्वीकार करना पड़ा। इसके विरोध में महात्मां गांधी ने आमरण अनशन कर दिया, फलस्वरूप गाधीं और डॉ. अम्बेडकर के मध्य ऐतिहासिक समझौता हुआ उसे पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इस ऐतिहासिक समझौता के फलस्वरूप दलितों को कम्युनल एवार्ड के स्थान पर राजनीतिक आरक्षण प्रदान किया गया। डॉ. अम्बेडकर सामाजिक व्यवस्था में जाति के स्थान

पर तर्क में अधिक बल देते हुये, तार्किक समाज की स्थापना के प्रबल पक्षधर थे। तर्क आधरित समाज की स्थापना कर परम्परागत पुरोहितवादी व्यवस्था के समूल नष्ट करने की बात कही, क्योंकि पुरोहिताई का कार्य का आधार जन्म होता था, कर्म नहीं। इसके लिये सरकार, राज्य स्तरीय परीक्षा का आयोजन करे। परीक्षा पास करने वाले लोगों को पुरोहित बनाया जाय, जिससे धार्मिक व्यवस्था में भी परिवर्तन एवं सुधार हो। सम्पूर्ण समाज जो परम्परागत श्रेणीबद्व असमानता पर आधारित समाज में स्वतंत्रता, समानता, न्याय, एवं बंधुत्व पर समाज की स्थापना हो। दलितों को अपने समस्याओं पर भी गौर कर सुधार करने पर जोर दिया। कि वे ग्रामीण परम्परागत सामाजिक व्यवस्था से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षा ग्रहण करने पर जोर दिया, दलितों को भी अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण करें, अच्छे स्कूलों में पढ़ाई करे, जिससे उसकी शिक्षा का लाभ समाज के लोंगों को मिल सके। दलितों को शहरी क्षेत्रों में निवास करना चाहिये। विश्व के बेहतर संस्कृति को आत्मसात करें, और अपने दलित लोगों का उद्धारकर्ता बने। दलितों को अपवित्र कार्य करने से बाज आयें। समाज के सर्वमान्य व्यवसाय को अपनाये, दलितों को एक राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित होकर कार्य करना चाहिये, राजनितिक शक्ति प्राप्त करने के लिये मिलकर प्रयास करना चाहिये। तथा संवैधानिक मार्ग का अनुशरण करना चाहिये। डॉ. अम्बेडकर का प्रयास था। कि भारतीय समाज में सभी वर्गों को समान रूप से समाजिक एवं आर्थिक न्याय की उपलब्धता हो। सामाजिक जीवन में सभी मनुष्यों की गरिमा का सम्मान किया जाये, एवं लिंग, जाति, वंश, धर्म आदि के आधार पर कोई भेद भाव समाज एवं राज्य के द्वारा नही किया जाये। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शिक्षा का विकास सभी को समान अवसर की उपलब्धता हो जिससे समाज के सभी लोंगों को समान रूप से अपने योग्यता का विकास करने समुचित अवसर प्राप्त कर, अपना विकाश करें।

सामाजिक सर्वेक्षण :– सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक जीवन के किसी विशेष पक्ष, विषय, प्रसंग अथवा समस्या के सम्बंध निर्भय योग्य तथ्यों के संकलन कर विश्लेषण करने की प्रकिया है। जो कि वैज्ञानिक सिद्धांतों व मान्यताओं पर आधारित होनें के कारण अनुभवमूलक निष्कर्षों को निकालने में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होता है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा का काई न कोई अपना महत्व या उद्देश्य जरूर होता है। सामाजिक सर्वेक्षण शोध की एक विधि है। इस विधि का भी एक निश्चित उद्देश्य है। सामाजिक जीवन के विविध पहलू है। जिनका अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण के द्वारा ही संभव है।

उपकरण :– सामाजिक सर्वेक्षण के लिये गूगल फार्म का सहारा लिया गया है। जिसमें समस्त भारत क्षेत्र से सर्वे रिपोर्ट कराया गया। जिसमें प्रश्नावली विधि का प्रयोग करते हुये, दस प्रश्न तैयार कर, प्रश्नों को ऑन लाईन सर्वे किया। जिसमें समस्त भारत राज्यों से उत्तरदाताओं का सहभागितापूर्ण उत्तर प्राप्त हुआ। एक सौ दस उत्तरदाताओं ने अपना उत्तर दिया। जिसमें विभिन्न उत्तरदाताओं में छत्तीसगढ़, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, आदि क्षेत्रों से प्रश्नों का उत्तर दिया।

तथ्य संकलन :– अध्ययन में सम्बंधित प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रश्नावली अनुसूची के प्रयोग के आधार पर अवलोकन किया गया इसमें प्राथमिक डाटा और द्वितीयक डाटा का संकलन करते हुये, संदर्भ ग्रंथों, पूर्व शोध जर्नलस, तथा सम्बंधित साहित्य प्रयोग में लाया गया है। यह सर्वेक्षण प्रचलित तथ्यों की सत्यता सिद्ध करने के लिये किया गया है।

वर्गीकरण :– अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त सूचनाओं को सर्वप्रथम क्रम में लगाकर परीक्षण किया। परीक्षण पश्चात सारणीयन से प्राप्त सूचनाओं का वर्गीकरण कर सम्पूर्ण सारणियनों से प्रतिशत निकाला गया।

State

110 responses

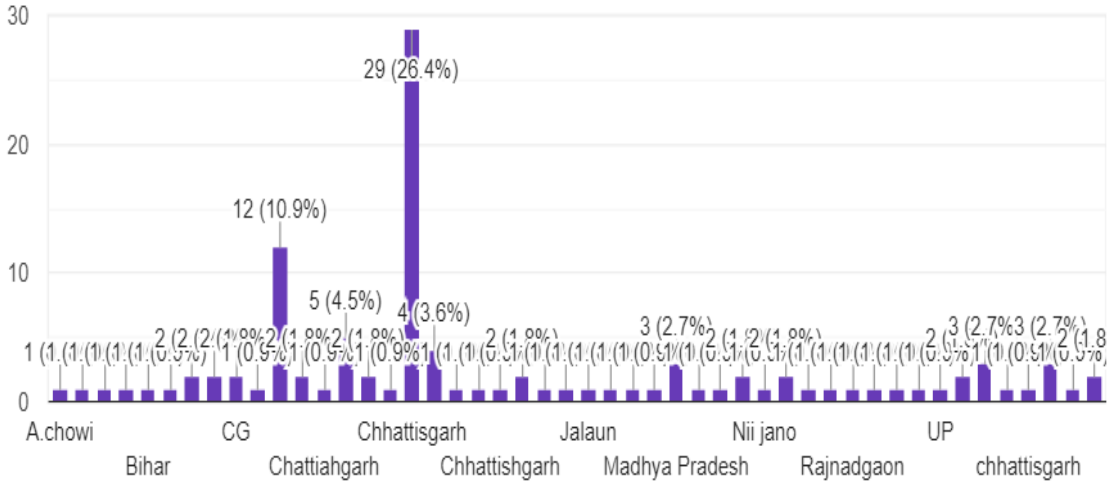

Country

110 responses

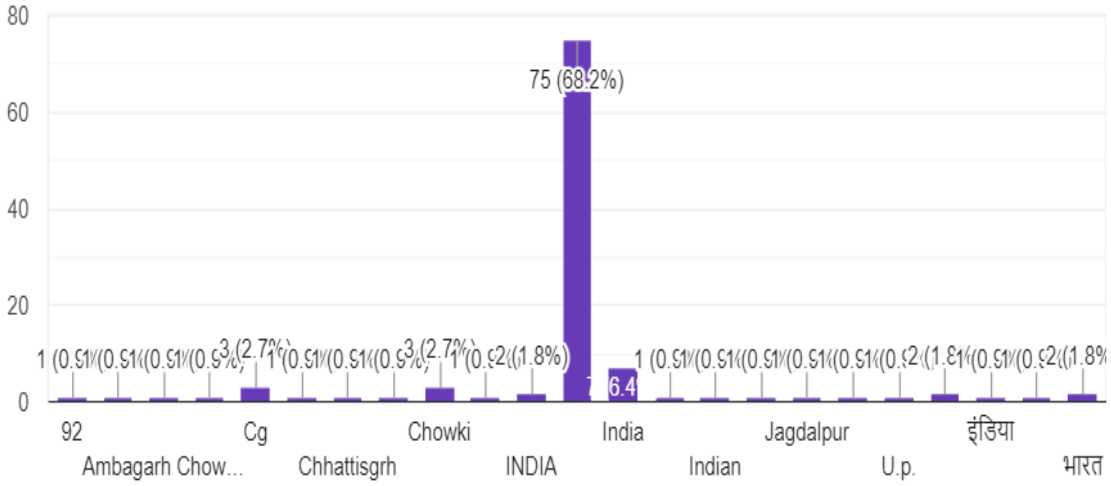

विभिन्न राज्यो से दिये गये उत्तरदाताओं की ग्राफ चार्ट

1. डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को भारत का अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर कहा गया

110 responses

2. डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने मुंबई हाईकोर्ट में लगभग 10 वर्ष तक अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष किया है जिस कारण से अस्पृश्यों को कानूनी रूप से सम्मान प्राप्त हुआ है

110 responses

3. महाड़ आंदोलन डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने की पहली यथार्थ प्रयास था ।

110 responses

4. रैमसे मैकडोनाल्ड के सांप्रदायिक पंचाट अस्पृश्यों के लिए एक वरदान था।

110 responses

5. भारतीय संविधान के जनक डॉ भीमराव अंबेडकर को कहा जाता है जो संविधान के मूल प्रावधान में अस्पृश्यता निवारण अधिनियम का समावेश किया जिसे संवैधानिक रूप से अस्पृश्यता निवारण सार्थक हो सका।

110 responses

6. अस्पृश्य लोगों के लिए समाज में सामाजिक समानता स्थापित करने आरक्षण की व्यवस्था संवैधानिक रूप से किया गया जिसे सामाजिक समानता स्थापित करने में मदद मिलती है

110 responses

7. डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को अपने जीवन के कटु अनुभव जो बचपन से लेकर के युवा होने तक प्राप्त हुआ था जिसके कारण से सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए उन्होंने संघर्षमय आंदोलन चलाया

110 responses

8. बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर अस्पृश्यों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए अपना संपूर्ण जीवन कुर्बान कर दिया ।

110 responses

9. हिंदू कोड बिल विवाद के कारण से डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देना पड़ा।

110 responses

10. डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को बीसवीं सदी के महानायक कह सकते हैं क्योंकि उसने दलित शोषित समाज को उसके हक दिलाने के लिए सामाजिक आंदोलन चलाया।

110 responses

विश्लेषण :– सामाजिक सर्वेक्षण गुगल डॉस फार्म में किया जिसका उत्तरदाताओं से जो उत्तर प्राप्त हुआ है। उनका विश्लेषण इस प्रकार है। 1.पूर्ण सहमत है। 2. सहमत हैं। 3. पूर्ण असहमत 4. असहमत।

1- पहला प्रश्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारत का अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर किंग कहा गया। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 68.2 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 24.5 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 92.7 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 2.7 पूर्ण असहमत। और चौंथा 4.5 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 7.2 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

2- दूसरा प्रश्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बम्बई हाई कोर्ट में लगभग 10 वर्ष तक अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष किया है। जिस कराण से अस्पृश्यों को कानूनी रूप से सम्मान प्राप्त हूआ है। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 73.6 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 21.8 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 95.4 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 0.9 पूर्ण असहमत। और चौंथा 3.6 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 4.5 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

3- तीसरा प्रश्न महाड़ आंदोलन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की सामाजिक भेदभव को समाप्त करने की पहली यथार्थ प्रयास था। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 73.6 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 22.7 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 95.3 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 0.9 पूर्ण असहमत। और चौंथा 2.7 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 3.6 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

4- चौथा प्रश्न रैमजे मेकडोनाल्ड के साम्प्रदायिक पंचाट अस्पृश्यों के लिये एक वरदान था। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 43.3 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 35.5 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 78.8 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 3.6 पूर्ण असहमत। और चौंथा 13.6 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 17.2 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

5- पांचवाँ प्रश्न भारतीय संविधान के जनक डॉ. भीमराव अम्बेडकर को कहा जाता है। जो संविधान के मूल प्रावधान में अस्पृश्यता निवारण अधिनियम का समावेशन किया जिसे संवैधानिक रूप से अश्पृश्यता निवारण सार्थक हो सका। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 77.3 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 18.2 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 95.5 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 1.8 पूर्ण असहमत। और चौंथा 2.7 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 4.5 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

6- छठवाँ प्रश्न अस्पृश्य लोगों के लिये समाज में सामाजिक समानता स्थापित करने में आरक्षण की व्यवस्था संवैधानिक रूप से किया गया जिसे सामाजिक समानता स्थापित करने में मदद मिलती है। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 70 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 23.6 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 93.6 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 5.5 पूर्ण असहमत। और चौंथा 0.9 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 6.4 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

7- सातवाँ प्रश्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर को अपने जीवन का कटु अनुभव जो बचपन से लेकर के यंग होने तक प्राप्त हुआ था जिसके कारण से सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के लिये उन्होनें सशक्त आंदोलन चलाया। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 80.9 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 15.5 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 96.4 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 2.7 पूर्ण असहमत। और चौंथा 0.9 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 3.6 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

8- आठवाँ प्रश्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर अस्पृश्यों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन कुर्बान कर दिया। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 82.7 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 14.5 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 97.3 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 1.8 पूर्ण असहमत। और चौंथा 0.9 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 2.7 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

9- नवमाँ प्रश्न हिन्दू कोड बिल विवाद के कारण से डॉ. भीमराव अम्बेडकर को मंत्रिमण्डल से त्या गपत्र देना पड़ा। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 66.4 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 27.3 प्रतिशत

सहमत दोनो का योग करने पर 97.3 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 0.9 पूर्ण असहमत। और चौंथा 5.5 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 6.4 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

10- दसवाँ प्रश्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बीसवी सदी के महानायक कह सकते है। क्योंकि उसने दलित शोषित समाज को उसके हक दिलाने के लिये सामाजिक आंदोलन चलाया। जिसमें 110 उत्तरदाताओं के द्वारा उत्तर इस प्रकार है। पहला 75.5 प्रतिशत पूर्ण सहमत । दूसरा 18.2 प्रतिशत सहमत दोनो का योग करने पर 97.7 प्रतिशत हो रहा है। तथा तीसरा 5.5 पूर्ण असहमत। और चौंथा 0.9 प्रतिशत असहमत है। दोनों का योग करने पर 6.4 प्रतिशत है। जो बहुत कम है।

उपसंहार :– डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संबंध में यह प्रश्न उनके सम्बंध में लोगों का दृष्टिकोण ज्ञात करने के लिये बनाया गया है। जिससे यह पता चल सके कि समाज में उसके प्रति लोगों का राय क्या है। यह प्रश्न गुगल फार्म बनाया गया है। कुछ चुनिन्दा प्रश्नों का चयन किया गया है। ऑनलाईन सर्वे कराया गया। जिसमें लोगों ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने स्वयं कहा कि यदि मुझे कहा जाय कि आप अपना हित को चुनेंगे या राष्ट्रहित तो मैं राष्ट्रहित का चुनाव करूंगा। यदि मुझे कोई यह कहे कि दलितों के हितों का चुनाव करना है या राष्ट्रहित का तो मैं कहुँगा दलित हित को, इस बात से यह अंदाजा लगाया जा सकता है। कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर का दलितों के प्रति कितना लगाव था। एक बार की घटना का उल्लेख करना चाहता हुँ कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर गोल मेज सम्मेलन में भाग लेने के लिये लंदन जाने वाले थे तब किसी ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर को कहा कि उसका लड़का का तबियत बहुत खराब है। उसकी बचने की उम्मीद कम है। तो उसने कहा यहाँ मेरा एक बेटा का सवाल है। यदि मैं गोल मेज सम्मेलन में भाग नहीं लेने जाऊँगा तो मेरे देश के लाखों बेटों का जीवन बर्बाद हो जायेगा। कहकर लंदन चला गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के लिये अपना दलित समाज के अधिकारों से बढ़कर कुछ नहीं था। ये उसकी दलित समाज के प्रति लगाव को प्रदर्शित करता है। समाज के लिये उन्होंने अपना सब कुछ परित्याग कर दिया। वे अपने जीवन के अंतिम क्षण तक समाज के लिये लड़ते रहे। सामाजिक असमानता को समाप्त करने के लिये । जिससे देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समानता की स्थापना हो सके। भारतीय संविधान में भी इस दिशा में काफी प्रयास किया, असमानता को दूर करने के लिये। इस कारण से डॉ. भीमराव अम्बेडकर को समाजिक न्याय एवं त्याग की मूर्ति कह सकते हैं। मेरा पूर्ण रूप से मानवीय एकता में विश्वास है। मेरा वास्तविक उद्देश्य अधिक अच्छी सामाजिक व्यवस्था का अन्वेषण करना और विश्व के समझ जीवन और कर्म का ऐसा आदर्श प्रस्तुत करना है। जो सार्वभौम रूप से सभी को स्वीकार्य हो, जिनका मुख्य उद्देश्य जाति, धर्म, पंथ, रंग, तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के घातक कृत्रिम भेदों को ध्वस्त कर सके और एक समता मूलक समाज की स्थापना कर सके। जाति और धर्म की संकीर्णता मनुष्य के लिये सबसे बड़ा शत्रु है। मानव जातियों के हितैषियों का कर्त्तव्य है कि उनका उन्मूलन करने में योगदान दें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1- एम.एन. श्रीनिवास, भारत में सामाजिक परिवर्तन।
2- डॉ. राजेन्द्र मोहन, डॉ. अम्बेडकर चिंतन और विचार जगत राम एण्ड सन्स, गांधीनगर, न्यु दिल्ली।
3- डॉ. अम्बेडकर के मुख्य भाषण, संकलन और सम्पादन, भगवानदास।
4- जी.एस. घुरिये 1961, कास्ट, क्लास एण्ड आकुपेशन, पापुलर बुक डिपो, मुम्बई।
5- एम.एन.श्रीनिवास, 1985, कास्ट इन माडर्न इण्डिया एण्ड अवर एसे. मीडिया प्रमोटर्स एवं पब्लिशर्स मुम्बई।
6- शोध धारा दलित विशेषांक शैक्षिक एवं अनुसन्धान संस्थान, उरई–जालीन, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित।
7- आज का दलित साहित्य : आतिश प्रकाशन दिल्ली।
8- डॉ. भीमराव अम्बेडकर : व्यक्तित्व के कुछ पहलू– मोहन सिंह
9- कृष्णदत्त पालीवाल– समाज व्यवस्था और दलित साहित्य।
10- दलित वर्ग सममेलन में भाषण : गाँधी संस्मरण और विचार ।
11- डॉ. अम्बेडकर जीवन दर्शन– विजय कुमार पुजारी ।

12- अम्बेडकर बी. आर. कास्ट, बाम्बे वेकर एण्ड कम्पनी।
13- श्रीवास्तव एच.सी. : भारतीय समाज संरचना, समाजशास्त्र प्रकाशन, वाराणसी।
14- राजनीतिक विचारक विश्वकोश, डॉ. ओमप्रकाश गाबा।
15- अंबेडकर चिंतन, संपादक– डॉ. दलबीर सिंह।
16- धनंजय कीर : डॉ. अम्बेडकर, जीवन और लक्ष्य, बम्बई।